International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 05, No. 02(II), April - June, 2023, pp. 79-82

हिन्दी फ़िल्म संगीत में 1950 से 1980 के दशक की प्रतिभावान कम लोकप्रिय पार्श्व गायिकाएं

डॉ. वन्दना खुराना*

सार

सन् 1950 से सन् 1980 के दशक पर दृष्टिपात करें तो हिन्दी फ़िल्म संगीत जगत में पार्श्व गायन के क्षेत्र में महिला पार्श्व गायिकाओं में सफलता की ऊंचाईयों को प्राप्त कर चुके नाम जैसे लता मंगेशकर, आशा भौंसले, नूरजहां, सुरैया, गीता दत्त आदि तो सभी जानते हैं किन्तु इसी दौर में बहुत सी प्रतिभावान एवं मधुर आवाज़ की धनी कुछ ऐसी पार्श्व गायिकाएं भी हुई थीं जिन्होंने बहुत कम गीत गाए लेकिन उनका फ़िल्म संगीत में योगदान बहुत अधिक रहा। इन्हें वो पहचान, नाम तथा सफलता नहीं प्राप्त हुई जिनकी ये अधिकारी थीं किन्तु इससे उनके योगदान को कम नहीं आंका जा सकता। इन गायिकाओं के गाए गीत हर पीढी ने पसंद किए और आगे भी पसंद किए जाते रहेंगे।

शब्दकोषः *पार्श्व गायन, संगीतकार, युगल गीत, शास्त्रीय संगीत, गायिकी।*

प्रस्तावना

भारतीय हिन्दी फ़िल्म जगत में पार्श्व गायन का क्षेत्र सदैव से ही आकर्षण का केन्द्र रहा है और यह कहना अतिश्योक्ति नहीं होगी कि भारतीय हिन्दी फ़िल्मों की जो विशिष्ट पहचान समस्त फ़िल्म जगत में बनी है उसका एक मुख्य कारण है – पार्श्व गायन। पार्श्व गायन हिन्दी फ़िल्म जगत का एक अभिन्न अंग और सौभाग्य से भारतीय हिन्दी फ़िल्म जगत में अत्यन्त प्रतिभावान एवं गुणी पार्श्व गायक–गायिकाएं रहीं हैं जिन्होंने पार्श्व गायन के क्षेत्र को हिन्दी फ़िल्म संगीत का अद्वितीय व अनूठा अंग बना दिया ।

यद्यपि अन्य क्षेत्रों की भांति पार्श्व गायन में भी पुरूष प्रधान्यता दृष्टिगोचर होती रही है किन्तु समय की गति के साथ शैनः – 2 महिला गायिकाओं ने भी अपनी प्रतिभा से इस क्षेत्र में अपना वर्चस्व कायम किया । कुछ महिला पार्श्व गायिकाओं ने अपनी मधुर आवाज़ व सटीक गायकी से पार्श्व गायन को हिन्दी फ़िल्म उद्योग में उच्च स्थान दिलवाया । इन गायिकाओं में कई दिग्गज नाम लिए जा सकते हैं जैसे लता मंगेशकर, आशा भौंसले, नूरजहाँ, सुरैया, गीता दत्त आदि ।

सन् 1950 से 1980 के तीन दशक की हिन्दी फ़िल्म संगीत जगत की यात्रा पर दृष्टिपात करें तो पार्श्व गायिकाओं के नाम की एक लंबी सूची हमें प्राप्त होती है जिन्होंने अपनी गायकी से सफलता की ऊचाईयों को प्राप्त किया किन्तु साथ ही इसी दौर में बहुत सी प्रतिभावान एवं मधुर आवाज़ की धनी कुछ ऐसी पार्श्वगायिकाएं भी हुई थीं जिन्होंने बहुत कम गीत गाए लेकिन उनका फ़िल्म संगीत में योगदान बहुत अधिक रहा। यद्यपि इनसे

* सहायक आचार्य संगीत कंठ, राजस्थान संगीत संस्थान, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

उनके योगदान को कम नहीं आंका जा सकता। इस दौर की कम प्रसिद्धि प्राप्त तथा संघर्षशील रहीं पार्श्वगायिकाओं ने अपनी विलक्षण प्रतिभा तथा अपनी–2 आवाज़ की विशिष्टता से श्रोताओं के मध्य अपना विशिष्ट स्थान बनाया। इनके गाए गीत हर पीढ़ी ने पंसद किए और आगे भी पसंद किए जाते रहेंगे। ऐसी प्रतिभावान एवं कम प्रसिद्ध लोकप्रिय पार्श्व गायिकाओं के नाम की सूची में बहुत से नाम आते हैं जिनमें से इस लेख में वाणी जयराम, आरती मुखर्जी, सुधा मल्होत्रा, हेमलता तथा कमल बारोट की सांगीतिक यात्रा को तथा हिन्दी फ़िल्मी संगीत में दिए गए योगदान का विवरण प्रस्तुत किया गया ।

कमल बारोट

'हंसता हुआ नूरानी चेहरा' जैसा यादगार नृत्य गीत में अपनी मधुर आवाज़ देने वाली गायिका कमल बारोट का जन्म 18 नवम्बर, 1938 तन्जानिया में हुआ। आपने हिन्दी फ़िल्म संगीत में गायन का प्रारंभ 1957 में आयी 'शारदा' फ़िल्म से किया। आपके द्वारा गाया गया सबसे लोकप्रिय गीत था फ़िल्म रानु दादा का 'सुना है जबसे मौसम है प्यार के काबिल'। इसके अतिरिक्त आपने मुकेश जी के साथ बहुत से युगल गीत गाए जिनमें से यादगार रहे –फिल्म रॉकेट गर्ल (1961) का 'चांद कैसा होगा', फिल्म मैडम जोरो (1954) का 'हम भी खो गए' आपने लता जी व आशा जी के साथ बहुत से युगल गीत भी गाए जिसमें सबसे लोकप्रिय गीत था फिल्म पारसमणि का लता जी के साथ गाया गया गीत – 'हंसता हुआ नूरानी चेहरा। ये आपके फिल्मी पार्श्व गायन कैरियर का सबसे पत्थर की मील था। इस गीत को बिनाका गीतमाला के प्रथम 10 गीतों में शामिल किया गया था। ऐसा ही एक यादगार गीत आपने आशा जी के साथ भी गाया – फ़िल्म घराना में 'दादी अम्मा दादी अम्मा मान जाओ' जिसे संगीत दिया था संगीतकार रवि जी ने।

फ़िल्म बरसात की रात (1960) में रोशन जी ने आपको सुमन कल्याणपुर के साथ युगल गीत गवाया – 'गरजत बरसत सावन आयो'।

जब कभी संगीतकार कई गायकों को लेकर गाने बनाते तो कमल बारोट जी उनकी पहली पसन्द होती है। आपने उस समय के कई दिग्गज गायक कलाकारों जैसे मुकेश, मोहम्मद रफ़ी, महेन्द्र कपूर आदि के साथ युगल गीत गाए। किन्तु पुरूष गायकों के साथ गाए आपके युगल गीत उतनी लोकप्रियता प्राप्त नहीं कर पाए थे जितने कि महिला गायिकाओं जैसे सुमन कल्याणपुर, आशा भौंसले, लता मंगेशकर तथा मुबारक बेगम के साथ गाए युगल गीत लोकप्रिय हुए ।

जहां उस काल की पार्श्वगायिका सुमन कल्याणपुर की आवाज़ लता मंगेशकर जी से समानता रखती थीं वहीं कमल बारोट की आवाज़ अपनी एक अलग विशेषता लिए मौलिक आवाज़ थी जो अन्य गायिकाओं के साथ प्रयुक्त होने पर अलग से पहचानी जा सकती थी इसीलिए संगीतकार अपने किसी महिला युगल गीतों के लिए कमल बारोट को गवाना पसन्द करते थे। आपने उस समय के कई बेहतरीन संगीतकारों के लिए जैसे – रोशन, ओ पी नैयर, रवि, चित्रगुप्त, लक्ष्मीकांत – प्यारेलाल के गीत गाए।

फ़िल्म संगीत जगत से ओझल होने से ठीक पहले आपने अंतिम फ़िल्म 'नसीहत' (1967) में अपनी आवाज़ दी थी। आपने हिन्दी फ़िल्म जगत को लगभग 10 वर्षों तक अपनी विलक्षण आवाज़ में लगभग 117 फ़िल्मों में 140 सुन्दर व अविस्मरणीय गीत दिए।

आरती मुखर्जी

1960 से 1970 के दशक की अत्यन्त प्रतिभावान पार्श्व गायिकाओं में से एक हैं आरती मुखर्जी । आपने बांग्ला एवं हिन्दी दोनों ही भाषाओं के गीतों में समान रूप से अपनी पहचान बनायी थी।

18 जुलाई 1943 को कलकत्ता में जन्मी आरती मुखर्जी को बचपन से ही अपने घर में संगीत का वातावरण प्राप्त हुआ । आपने सर्वप्रथम अपनी माताजी से संगीत सीखा तथा उसके बाद सुशील बैनर्जी, उस्ताद मोहम्मद सगीरूद्दीन ख़ां, पंडित चिन्मय लाहेड़ी, पंडित लक्ष्मण प्रसाद जयपुरवाले व पंडित रमेश नाडकर्णी जैसे नामचीन गुरूओं से शास्त्रीय संगीत की शिक्षा प्राप्त की।

आपने संगीत कैरियर की शुरूआत बांग्ला फ़िल्मों से की थी किन्तु 1955 में हुए ।सस प्दकपं डनेपब ज्ंसमदज च्तवहतंउउम में अपने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सौभाग्य से इस प्रतियोगिता के निर्णायकगणों के रूप में अनिल बिस्वास, नौशाद, वसंत देसाई तथा सी.रामचन्द्र जैसे हिन्दी फ़िल्म संगीतकार मौजूद थे। यही से आपके पार्श्व गायन कैरियर का शुभारंभ हुआ।

हिन्दी फ़िल्म संगीत जगत में पार्श्व गायन के दौरान आपने किशोर कुमार, आशा भौंसले जैसे गायक कलाकारों के साथ युगल गीत गाए। आपने किशोर कुमार जी के साथ 'बच्चे हो तुम खेल खिलौने' तथा 'दो पंछी दो तिनके' (फिल्म : तपस्या) जैसे यादगार गीत गाए। 'दो नैना और इक कहानी' (फिल्म : मासूम) तथा फिल्म 'गीत गाता चल' में 'श्याम तेरी बंसी' 'कर गया कान्हा', 'मै वही दर्पण वही' जैसे अविस्मरणीय व मधुर गीत गाए।

आपने बांग्ला व हिन्दी दोनों भाषाओं में लगभग 15 हजार गीत गाए। आप बहुमुखी प्रतिभा वाली गायिका थीं जो न केवल शास्त्रीय गायन में निपुण थीं बल्कि साथ ही रवीन्द्र संगीत, नज़रूल गीति, ठुमरी, भजन, टप्पा, तराना व ग़ज़ल आदि सभी में कुशल थीं। आप देश–विदेश में अपनी आवाज़ एवं प्रतिभा से दर्शकों को मुग्ध कर देती थी।

आपके हिन्दी फ़िल्म जगत में दिये गये सांगीतिक योगदान के परिणामस्वरूप आपको बहुत पुरस्कार व सम्मान प्राप्त हुए जिनमें प्रथम है – 'गीत गाता चल' फिल्म के लिए 'मियां तानसेन पुरस्कार' (सुर सिंगार सम्सद द्वारा) तथा सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका के रूप में राष्ट्रीय फिल्म अवार्ड ।

सुधा मल्होत्रा

हिन्दी फ़िल्म संगीत की दुनिया में पार्श्व गायन के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण नाम है – सुधा मल्होत्रा।

सुधा मल्होत्रा का जन्म 30 नवम्बर, 1936 को दिल्ली में हुआ । आपके माता पिता ने जब आप की संगीत के प्रति रूचि को पहचानते हुए आपको संगीत शिक्षा दिलवाना प्रारंभ किया। आपने सर्वप्रथम लाहौर के देशबंधु सेठी जी से संगीत सीखा। देश के विभाजन के बाद जब आप दिल्ली आईं तो आपने पंडित अमरनाथ जी से संगीत की शिक्षा लेनी प्रारंभ की ।

प्रसिद्ध संगीतकार अनिल बिस्वास आपके मामा के अच्छे मित्र थे। अनिल बिस्वास जी ने जब सुधा मल्होत्रा जी का गाना सुना तो बहुत प्रभावित हुए तथा उन्होंने फ़िल्म ''आरजू'' में आपको एक गीत दिया। सुधा मल्होत्रा ने 14 वर्ष की आयु में अपना पहला गीत 'मिला गए नैन' फ़िल्म आरजू के लिए रिकॉर्ड किया जो जनता द्वारा बहुत सराहा गया । इस गीत की सफलता के बाद आपको बहुत से गीत गाने का प्रस्ताव मिला ।

अपने 10 साल के कैरियर में सुधा मल्होत्रा ने हिन्दी फ़िल्म संगीत जगत के बहुत से संगीतकारों के साथ गीत रिकार्ड किए। लगभग 135 फ़िल्मों में 250 गीत आपने रिकॉर्ड किए। इनमें से कुछ यादगार गलत थे – 'मोहब्बत की धुन बेकरारों से पूछो' (फ़िल्म : दिल–ए–नादान), 'आवाज़ दे रहा है आसमां से कोई' (फिल्म : गौहर), 'घुंघट हटाई के नज़रें मिलाई के' (रंगीन राते), 'मालिक तेरे जहां में (अब दिल्ली दूर नही), कासे कहूं मन की बात (धूल का फल)। ये सभी गीत जनता के दिलों पर गहम प्रभाव डाल गए।

1950 के दशक में अनेकों गीत गाने के बाद पारिवारिक जिम्मेदारियों के चलते आपने गीत रिकॉर्ड करने कम कर दिए। आपका अंतिम गीत फ़िल्म 'दीदी' (1959) से था – 'तुम मुझे भूल भी जाओ तो ये हक है' ये गीत आपने मुकेश जी के साथ गाय जो एक यादगार गीत बना।

सन् 1960 में आई फिल्म 'बरसात की रात' की मशहूर कव्वाली 'ये इश्क इश्क है' आपके पार्श्व गायन कैरियर में एक नायाब हीरे से कम नहीं थी। इस कव्वाली ने आपको हिन्दी फिल्मी संगीत जगत में एक विशिष्ट पहचान दिलवायी ।

किन्तु उस दौर की अन्य गायिकाओं की तरह ही सुधा मल्होत्रा जी को भी फिल्म जगत के षड़यत्रों एवं दूषित राजनीति का सामना भी करना पडा था।

पार्श्व गायन को छोड़ने के बाद भी आपने संगीत का अभ्यास जारी रखा। आप मंच प्रस्तुतियों एवं संगीत शिक्षण कार्य के द्वारा संगीत से जुड़ी रहीं।

आपको भारतीय फिल्म संगीत जगत में आपके द्वारा दिए गए अमूल्य योगदान के लिए भारत सरकार का प्रतिष्ठित सम्मान पद्म श्री पुरस्कार 2013 में प्रदान किया गया ।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. www.indianexpress.com
2. www.web.archive.org
3. http://m.imdb.com
4. http://m.tribuneindia-com
5. www.indiaforoms.com
6. bollywoodfiles-blogspot.com
7. http://m.tribuneindia-com
8. पंकज राग, 'धुनों की यात्रा', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006
9. फिल्म संगीत इतिहास अंक जनवरी–फरवरी 1998, संगीत पत्रिका, संगीत कार्यालय, हाथरस।
10. लवनजनइम पर दिए गए विभिन्न साक्षात्कार ।

❖◆❖